याद रहे, सरकारें इस हत्यारे-बलात्कारी "बाबा" के साथ थीं

धीरेश सैनी

गुरमीत सिंह उर्फ़ राम-रहीम को शुक्रवार को पत्रकार रामचंद्र छत्रपति की हत्या के केस में दोषी करार दिया गया है तो 25 अगस्त 2017 का वह दिन याद आ रहा है जब उसे अपने डेरे की साध्वियों के रेप केस में दोषी पाया गया था। धर्म के नाम पर स्थापित अपनी धूर्त धर्मसत्ता और उसे राजसत्ता के अश्लील संरक्षण के चलते गुरमीत को भी तब वैसे फ़ैसले का गुमान नहीं था। बतौर याद दिहानी, यह जिक्र ठीक इस वक़्त फिर किया जाना ज़रूरी है कि शहीद रामचंद्र छत्रपति का परिवार किसी नन्हें दीये की थरथराती लौ सा जब अंधकार के इस साम्राज्य से जूझ रहा था तो "बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ" अभियान वाली सरकार रेप और हत्या के अभियुक्त के साथ खड़ी हुई थी। अफ़सोस कि हरियाणा की पूर्व की सरकारें भी भयंकर अपराधों का गढ़ बने डेरे के साथ ही खड़ी दिखाई देती रही थीं।

हरियाणा के पंचकूला में स्थित सीबीआई की विशेष कोर्ट में जज जगदीप सिंह ने शुक्रवार को डेरा सच्चा सौदा के गुरमीत राम रहीम और उसके तीन सहयोगियों निर्मल, कुलदीप और किशन लाल को सिरसा के पत्रकार रामचंद्र छत्रपति की हत्या के केस में दोषी करार दिया। गुरमीत पहले ही अपने डेरे की साध्वियों के साथ रेप के केस में जेल काट रहा है। इन्हीं जज जगदीप सिंह ने 28 अगस्त 2017 को उसे रेप केस में 20 साल की कैद व 30 लाख रुपये जुर्माने की सजा सुनाई थी। उसे 25 अगस्त 2017 को दोषी करार दिया था तो जमकर हिंसा हुई थी जिसके छींटे भारतीय जनता पार्टी की सरकार पर आए थे। तब जिस तरह की परिस्थितियां पैदा कर दी गई थीं, उससे लगता यही था कि आखिरी वक़्त तक फ़ैसले को लंबित कराने की कोशिश की गई थी। 25 अगस्त 2017 को "जनचौक" पर ही जो लिखा था, उसे फिर से दोहराना ज़रूरी लग रहा है।

गुरमीत

छत्रपति

पंचकूला और दूसरे शहरों में जारी हिंसा के तांडव के लिए कौन जिम्मेदार है? जो हो रहा है, क्या यह पहले ही साफ तौर पर नहीं दिखाई दे रहा था? क्या एक चार्जशीटेड अभियुक्त के चरणों में लहालोट होते केंद्र व प्रदेश की बीजेपी सरकारों को बने रहने का कोई नैतिक हक़ है? क्या यह हिंसा अप्रत्याशित है? क्या सरकार इसकी जिम्मेदारी लेगी?

संक्षेप में कुछ बातें-

1- गुरमीत राम-रहीम बलात्कार और हत्याओं के गंभीर आरोपों से घिरे हुए थे। लेकिन, विधानसभा चुनाव के प्रचार के लिए सिरसा पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने डेरे को लुभाने वाला भाषण दिया।

2- विधानसभा चुनाव में गुरमीत राम-रहीम का समर्थन पाने के लिए बीजेपी ने पूरा जोर लगा दिया था और टॉप लीडरशिप ने हाजिरी लगाई थी।

3- जाहिर है कि सौदेबाजी हुई थी। आरएसएस के स्वयंसेवक मनोहर लाल खट्टर के नेतृत्व में हरियणा में सरकार बनी तो कैबिनेट रेप व हत्याओं के आरोपी बाबा से आशीर्वाद लेने पहुंची।

4- गुरमीत राम-रहीम की वाहियात फिल्म को टैक्स फ्री कर दिया गया।

5- केंद्र व प्रदेश सरकारों के मंत्री डेरे में लहालोट होते रहे।

6- चार्जशीटेड अभियुक्त को सरकार ने ब्रांड अंबेसडर घोषित कर दिया। उसकी तारीफों के ट्वीट किए गए। मंत्री उस अभियुक्त के साथ झाड़ू लगाने के ड्रामे करते रहे।

7- क्या केंद्र व प्रदेश की सरकारें गंभीर अपराधों के आरोपों से घिरे एक ताकतवर शख्स का महिमामंडन करने में नहीं जुटी थी? जो वलनरेबल परिवार इतने बड़ी ताकत के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ रहे थे, उनके मनोबल पर, सरकारी मशीनरियों के मनोबल पर और न्यायिक अधिकारियों के मनोबल पर इस तरह क्या प्रभाव डाला जा रहा था?

8- क्या एक अपराधी को इस तरह मदद करने के लिए मंत्रीगण जिम्मेदार नहीं हैं?

9- क्या यह साफ नहीं था कि गुरमीत राम-रहीम को सजा सुनाई गई तो हिंसा हो सकती है?

10- इससे निपटने के लिए क्या इंतजाम किए गए?

11- अदालत के चिंता जताने के बावजूद भीड़ को पंचकूला में इकट्ठा होने दिया गया और सीनियर मंत्री रामविलास शर्मा भीड़ का हौसला बढ़ाने वाला ही बयान देते रहे? क्या सरकार चुनाव में मदद का अहसान उतार रही थी? जबकि भीड़ के पास पट्रोल बम जैसे हथियार होने की खबरें भी चल रही थीं।

12- क्या भविष्य में कोई सबक लिया जाएगा? एक अपराधी के अड्डे की छानबीन की जाएगी?

13- हिंसा शुरु हुई तो हालत यह थी कि फोर्स को देर तक समझ में नहीं आर रहा था कि क्या करे? जाहिर है कि कोई स्पष्ट रणनीति या निर्देश नहीं थे।

14- क्या भविष्य में कोई सबक लिया जाएगा? एक अपराधी के अड्डे की छानबीन की जाएगी? (आखिर एक अभियुक्त को सरकार क्यों देती रही खुला संरक्षण? शीर्षक से 25 अगस्त 2017 को प्रकाशित)

यह न समझ लिया जाए कि भाजपा से पूर्व की सरकारों ने इस मामले में डेरा सच्चा सौदा की मदद नहीं की थी। अखबार के संपादक रामचन्द्र छत्रपति को 24 अक्तूबर 2002 को सिरसा में उनके घर से बाहर बुलाकर पांच गोलियां मार दी गईं थीं। दो हमलावरों को मौके पर ही पकड़ लिया गया था। छत्रपति ने 21 नवंबर 2002 को दिल्ली के अपोलो अस्पताल में दम तोड़ दिया था। इस केस में एफआईआर दर्ज कराने वाले छत्रपति के बेटे अंशुल की उम्र महज 13 साल थी। गौरतलब है कि छत्रपति ने ही अपने अखबार में एक साध्वी की उस बेनाम चिट्ठी को प्रकाशित किया था जिसका 24 सितंबर 2002 को हाईकोर्ट ने संज्ञान लेकर सीबीआई जांच का आदेश दिया था।

उस दौरान हरियाणा में ओमप्रकाश चौटाला के नेतृत्व में इनेलो-भाजपा गठबंधन की सरकार थी। प्रदेश सरकार सीबीआई जांच की संस्तुति करने के लिए तैयार नहीं थी। पुलिस ने इस केस में डेरा प्रमुख की जमकर मदद की। शहीद पत्रकार छत्रपति के पुत्र अंशुल को कोर्ट का दरवाजा खटखटाना पड़ा था। प्रदेश में कांग्रेस की सरकार आई और करीब 10 सालों तक भूपेंद्र सिंह हुड्डा मुख्यमंत्री रहे तो भी सरकार पर डेरे का ही असर रहा। अभियुक्त गुरमीत को जेड प्लस सिक्योरिटी मुहैया कराने से लेकर उसके अनुयायियों की भयंकर कारगुजारियों को अनदेखा करने का सिलसिला जारी रहा।

एक दिन पहले ही अंशुल छत्रपति ने एक दिवंगत पूर्व सीएम का भी जिक्र किया जिसने उनके पिता के मित्र रहे किसी सरपंच के जरिये केस में समझौता कर लेने का सुझाव दिया था। शायद वह दिवंगत पूर्व सीएम वही हों जिनकी देवीलाल-चौटाला परिवार से राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के चलते उनके गृह जिले सिरसा में खास दिलचस्पी रहती आई थी। सिरसा में मशहूर रही अपुष्ट चर्चाओं के मुताबिक, डेरे को लेकर केवल एक मुख्यमंत्री की भृकुटि तनी थी और वह मुख्यमंत्री बंसीलाल थे। बंसीलाल हविपा-भाजपा गठबंधन सरकार के मुखिया थे। कहा जाता है कि तब डेरे ने लालकृष्ण आडवाणी के जरिये इस संकट को टाला था।

गुरमीत और उसके डेरे की ताकत और उसे सत्ताओं के संरक्षण की वजह से इस केस में आए फ़ैसले का महत्व और भी ज़्यादा है। भले ही जन सरोकारों के चलते सत्ताओं से टकराने वाले पत्रकारों और एक्टिविस्टों के दमन के मामले बढ़ते गए हों और अनेक में न्याय की धूमिल आशाएं भी न हों तो भी ऐसे गाढ़े वक़्त में यह केस प्रतिरोध की अनिवार्यता और गरिमा के तौर पर हौसला देने वाला है। यह इस बात की भी मिसाल है कि बड़े मीडिया घराने खरीद लिए जाएं या चुप करा दिए जाएं तो "पूरा सच" जैसा कोई छोटा सा अखबार और उसका प्रतिबद्ध संपादक कितना पुरअसर हो सकता है।

हुज़ूर भगवान से एक मुलाकात, मैं धन्य हो गया...!

हरियाणा का सिरसा पर्यटन का केन्द्र तो नहीं है पर अगर आप पत्रकारिता से जुड़ें हैं और मूल्यपरक पत्राकारिता से आपकी किसी तरह की आपसदारी है तो सिरसा आपके लिए एक तीर्थ की जगह हो सकती है। पत्रकारिता की एक लीक आजाद भारत में सिरसा से शुरू होती है जो जल्दी ही खत्म हो सकती है अगर हम आप सबने मिलकर उस लीक को बचाने की कोशिश नहीं की। सिरसा को पत्रकारिता का तीर्थ आप इस तौर पर मान सकते हैं कि इस सिरसा के पत्राकार रामचंन्द्र छत्रापति ने सच लिखने के आरोप में अपनी शहादत दी है। 21 नवम्बर 03 को मशहूर पत्रकार प्रभाष जोशी ने छत्रपति की पहली बरसी पर छत्रपति की शहादत को माथा टेकते हुए हम सबको चेताया है- पत्रकारिता के सामने छोटे-बड़े हिटलर खड़े हैं आप अगर इन हिटलरों से नहीं लड़ेगे तो अपनी प्यारी पत्रकारिता को घुन खा जायेगा। प्रभाष जोशी की चुनौती को अगर आप स्वीकार करते हैं तो सिरसा की तरफ मुड़िये।

छत्रपति की शहादत के बारे में कुछ भी जानने के लिए हमें शहादत के वजहों की तह में जाना पड़ता है और उन कारणों की जड़ में पहुंचने पर परिणाम हमें खबरदार करता है। छत्रपति के निकट मित्र हरियाणा के प्रतिष्ठित अधिवक्ता लेखराज ढोट कहते हैं छत्रपति को याद करने का मतलब ही है सच्चा सौदा डेरा और उनकी धमकियों के खिलाफ लिखना। सच्चा सौदा डेरा का भूत अगर इतना डरा रहा है। इस भूत का खौफ अगर पत्राकारिता के लिए इतना भयानक है तो हमें खौफ का निकट दर्शन जरूर कर लेना चाहिए। डेरा है और डेरे में सच की सौदेबाजी है सब कुछ खुला-खुला है तो क्या अंदर जाना और सब कुछ अपनी खुली आंखों से देख लेना भी उतना ही आसान है। रामचन्द्र छत्रपति की हत्या के बाद हरियाणा के पत्रकारों की महापंचायत ने डेरा का हुक्का-पानी तो बंद किया ही, कुछ डेरा चारण पत्रकारों को पत्रकार बिरादरी से निकाल बाहर भी किया। महापंचायत के कठोर फैसले से पत्रकार विरादरी से निकाल बाहर हुए पत्रकार डेरा की कमेटी, प्रबंध कार्यकारिणी कमेटी और डेरा के मुख पत्र 'सच कहूं' की पत्रकारिता में लग गये हैं। प्रेस कमेटी के मान्यवर आपका डेरा का दर्शन करा सकते हैं। शर्त यह है कि आपके बारे में यह तय हो कि आप डेरा के पक्ष में ही लिखने वाले हैं। हम सोचते हैं सिरसा में छत्रपति की शहादत को सलाम कर लौटने के साथ उस 'सच्चा सौदा डेरा' के सच को निहार लेना भी उतना ही जरूरी है जिसके सौन्दर्य का सारा छद्म छत्रपति को मालूम हो चुका था। तीसरे दिन की कोशिश पर जगदीश सिंह सिंह, पवन बंसल, रामाश्राय गर्ग नामक तीन चेहरे गेस्ट हाउस पधारे हैं। ये जन सच्चा सौदा डेरा प्रेस कमेटी के सदस्य हैं और नये आगंतुक की विश्वसनीयता को परखने का पूरा हक है। हमने तय किया है हमें सच की सौदेबाजी का दर्शन करना है तो आज हर तरह का झूठ बोलने के लिए तैयार रहना होगा। हमारी वाकपटुता से वे मुग्ध् हो चुके हैं। किसी ने फोन से कहीं कोई इंडीकेशन दिया है क्या भगवान गुरमीत राम रहीम सिंह को हमारे बारे में बता दिया गया है। जगदीश सिंह सिद्धू ने मार्केट कमेटी के गेस्ट हाउस को छोड़कर डेरा के एसी गेस्ट हाउस में ही टिकने का अनुरोध किया है और एक दिन नहीं अपनी मर्जी से दो, चार दिन, हफ्ते।

गर्मी काफी है, धूप में तपन है। वातानुकूलित स्टीम की ठंडई लूटते हुए दोपहर के भोजन के लिए हमें डेरा का आतिथ्य स्वीकार करना चाहिए। डेरा का अपना व्याकरण है, अपना शब्दकोश है। डेरा के परिसर क्षेत्र में सिरसा को सरसा लिखा जाता है। क्या पूरा सिरसा जब डेरा के कब्जे में होगा तो सिरसा बदलकर सरसा हो जायेगा। 'सच कहूं' डेरा का दैनिक समाचार पत्र है। समाचार पत्र है, अपना आफसेट है। हमें बताया जा रहा है पंजाबी गुरुमुखी और हिन्दी सहित रोज डेढ़ लाख सच कहूं छपते हैं। अपने हाथ में सच कहूं का एक विशेषांक है। तस्वीरें आलीशान किलानुमा इमारतों की हैं और इन तस्वीरों के बीच में खबर का शीर्षक है 'गर्ल्स स्कूल या परीलोक'। थोड़ा विस्मय हुआ जरूर पर जल्दी ही सतर्क हो गया। यह सच का डेरा है, यहां झूठ कुछ भी नहीं है। यहाँ डेरा बेटियों को परी कहकर संबोधित करता है। डेरा के व्याकरण में बेटी को परी कहते हैं, तो हमें क्यों ऐतराज। हरियाणा समाज ने इन्हें इतनी छूट दी है। यह 'सच कहूं' डेरा के कच्चे चिट्ठे को परत-दर-परत उघाड़ने में लगे पूरा सच का जवाब ही है।

डेरा आने वाले अमीर सात संगतों के लिए ट्र वर्ल्ड की रंगीन हसीन दुनिया का आनंद लेना जरूरी है। स्वीमिंग पूल, नाचते झूले, कशिश रेस्टोरेंट का हसीन संसार। 140 कमरों का वातानुकूलित गेस्ट हाउफस। अंदर की दुनिया आपको एक पल के लिए फूलों के गुलदस्तों की तरह दिख सकती है। दो वर्ष पहले डेरा के पांच सात संगतों ने मिलकर महाराज जी के अर्शीवाद से सब कुछ बनाया है। कशिश रेस्टोरेन्ट में हम खाने के लिए बिठाए गए हैं। बाहर दूसरी दुनिया दिखती है। दायें बाजू शीशे का घेरा है और घेरे से बाहर पानी भरा है। चारों तरफ पानी भरे छोटे तालाब के बीच शीशे के घर में होकर हम जो देख रहे हैं, आप भी देखिए। शीशे पर पानी का रंग हरा-हरा दिखता है। आप हमें अभी बाहर से देख रहे हैं तो हम मछलियों की तरह दिख सकते हैं। सोचिए ट्रन्न वर्ल्ड की दुनिया का प्रवेश ही इंसान को मछली बना देता है और अपन इक्वेरियम में कैद हो जाते हैं। बाहर वाटर स्लेटिंग, स्केटिंग करती लड़कियां दिखती हैं। जिनके देह के कुछ खास हिस्से कपड़ों के बिना हैं, वे हम महलियों को इस समय कितने अच्छे लग रहे हैं। सच्चा सौचा डेरा का दर्शन कराने वाले कृपावंत इस दुनिया में आकर हमारी पूरी पत्रकारिता एक पल के लिए निहाल हो सकती है। इधर 200 से ज्यादा भैंसे हैं, गायें हैं, सेवादार साधु हैं। डेरा वाले दूधो नहायो पूतो फलो। सच नर्सरी के अंदर सेवादार एक-एक पौधे को नया रूप देने मे लगे हैं। अंगूर, सेव, चीकू, लीची, लौंग, अमरूद, बादाम, शहतूत, नारियल यहाँ सब कुछ है। युवती कन्या बहनें गुलाब की पंखुड़ियों को गुलकंद बनाने के उपक्रम में लगी हैं। हमसे कहा गया युवती कन्या बहनों को साध्वी कहा जाये। डब्बे में पैक हो रहे गुलकंद और शहद का व्यापार लगातार बढ़ता जा रहा है। इस गुलकंद, शहद के व्यापार का क्या हिसाब है। साधु निर्मल कहते हैं- सब दातार की कृपा है, सब प्रभु की चरणों में। सच नर्सरी के अंदर एक दफ्तर है। यहां डेरा प्रमुख गुरमीत सिंह राम रहीम की तस्वीरें सजी हैं। 23 वर्ष की उम्र में डेरा प्रमुख बनने वाले बाबा गुरमीत अभी युवा हैं और युवा बाबा तस्वीरों की दुनिया में खूब फबते हैं। मुस्काते बाबा, ट्रैक्टर चलाते बाबा, फावड़ा चलाते बाबा। अलग-अलग पोज के लिए अलग-अलग रंग बिरंगी पोशाकों में हंसते खिलखिलाते महाराज तस्वीरों की दुनिया में आज भी खूब जमते हैं। पानी, पहा?, जंगल, उगते सूरज और डूबते सूरज को निहारते महाराज...।

प्र. - एकाकी जीवन में कोई युवती कैसे ज्वॉय फील कर सकती है ?

शीला पुनिया - मेरे गुरूजी पूर्ण संत है, इसलिए मैं संतुष्ट हूं ।

प्र. - क्या स्कूली लड़कियों को भी साध्वी बनने के लिए प्रेरित करती हैं ?

शीला - सबको अपनी मंजिल बता दी जाती है । अपनी राह चुनना सबकी मनमर्जी पर है। यहां 2000 लड़कियां हैं, किसी पर दबाव नहीं है । कनाडा में रह रहे पिता भी अपनी बेटियों को यहां भेजकर सुरक्षित महसूस करते हैं । कुछ मेधावी लड़कियां हैं जो रोज मजलिस में जाती हैं ।

प्र. - वैवाहिक जीवन के बिना आपकी संतुष्टि का रहस्य क्या है ?

शीला - देखिए इस समय मजलिस का टाइम हो रहा है । बाबा जी सारे सवालों का जवाब दे देंगे। बाहर दो बस खड़ी है। सेवादार जज साहब आपने पढ़ी लिखी इल्म वाली बेटी को बाबा के चरणों मे सौंप दिया। अब आपकी बेटी मैडम पुनिया बसों में चुनिंदा लड़कियों को साथ कर साध्वी की अगली पीढ़ी तैयार कर रही है। हमने पूछा मेधावी लड़कियों का सेलेक्शन (चयन) अच्छा है। सब खूबसूरत हैं। मैडम ने कहा जो खूबसूरत होती हैं वही मेधावी होती हैं। परीलोक की चुनिंदा परियां साध्वी होने का प्रशिक्षण लेने मजलिस में शामिल हैं । मैडम ने चलते हुए नहीं भूलने वाली हंसी के साथ कहा आप भी मजलिस में जरूर चलिये। आपको भी पता चल जायेगा कि बाबा जी सचमुच पूर्ण संत हैं।

मजलिस लगी है, दस हजार से बढ़ी सात संगतों की भीड़ इंतजार कर रही हैं। बाबा जी साढ़े पांच में आयेंगे। मैडम शीला पुनिया एम.ए., एम. फिल साध्वियों के साथ बाबाजी के राज सिंहासन की तरफ टकटकी लगाये बैठी हैं । मैडम की देह पर कपड़ा भी है पर कपड़ा इतना ही रंगीन है कि दूर से देखने पर चमकते चेहरे की तरह देह भी चमकने लगता है। कई हैं, जिनके देह रूप सौन्दर्य सौष्ठव मैडम पूनिया से मेल खाते हैं। गीतों की महफिल खत्म हुई तो कहा गया बाबाजी आ रहे हैं। महिलाओं की भीड़ एक तरफ, पुरुष दूसरी तरफ। टीन चादरें की स्थायी छत । 10 हजार की इस भीड़ में हम अकेले नये सात संगत हैं। यह हर रोज सुबह-शाम की मजलिस का एक हिस्सा है । लोगों के पास इतना समय है कि सुबह शाम महाराज जी का प्रवचन सांस की तरह ग्रहण करते हैं। जो आया है, वह भूखा नहीं जायेगा । सबके लिए लंगर है । जी प्रसाद लेकर जाना है जी। सेवादार जिसे यहां लगना है, सेवा में लगा है। महिलाएं पंखा झुला रही हैं । पांच हाथ लंबा कपड़े का भारी पंखा हिलाते आप जल्दी ही थक सकते हैं । महाराज जी सिंहासन पर विराजे तो सबने हाथ जोड़कर आंख मूंदकर माथे को धरती पर नवाया । सिंहासन पर विराजे हुज़ूर महाराज हाथ सामने हिलाते हैं, सब धन्य हो रहे हैं, मैं भी धन्य हो गया । पसीने से तर-ब-तर सेवादार भारी पंखा झुलाते थकता है तो दूसरा खड़ा हो जाता है । महाराज जी खुद मयूर के पंख से अपनी लंबी लहलहाती दाड़ियों को हवा पिला रहे हैं । सर पर लाल-हरा कसीदेदार चमकती टोपी है । टेबुल पर फूलों का सुंदर गुलदस्ता, सिंहासन के पीछे परदे पर चकमते चकमक सितारे और सितारों की तरह चमकती हुज़ूर की आंखें । अभी जो हो रहा है पूरा शहर देख रहा है । हुज़ूर सिरसा को जिलाते हैं, सिरसा की सांस हुज़ूर से चलती है । साध्वी शीला पुनिया के पूरण आनंद को बाकी लोग प्रभु अवतार भगवान मानते हैं । मैं जीवन में पहली बार किसी सक्षात भगवान को अपनी आंखों से देख रहा हूं । आप सब भी जानिए भगवान परलोक में नहीं सिरसा में रहते हैं । अभी जो सेवादार भगवान को पंखा झेल रहा है एक अवकाश प्राप्त न्यायाधीश है ऐसा बंसल जी बता रहे हैं। जीवन भर न्याय बेचने की नौकरी करने वाले पंच परमेश्वर भगवान के चरणों में तृप्त हो रहे हैं। अभिजन समाज ने 6 से 7 साल की नन्ही बेटियों को सिंहासन के सामने भेज दिया है । यही नन्ही बेटियां है जो कल गर्ल्स होस्टल जाकर परी हो जायेंगी । स्वर्ग लोक में नृत्य करती परी शिशु कन्याएं भगवान को रिझा रही हैं । संगीत की धुन पर नृत्य भगवान की आंखों को आराम देता है । हमें बताया जा रहा है कि आज हमें मानसिक शांति मिलेगी भगवान हमारा सारा दुख हर लेंगे । हम सोचते हैं अगर आज हमें चंगा कर दिया जायेगा तो इस भगवान को पूरे मुल्क में ले चलो । अपने मुल्क को चंगा करो, भगवान आ रहे हैं।

संगीत का स्वर अचानक थम गया, कोलाहल कम हो गया । भगवान बोलने लगे इस संसार में कुछ भी स्थायी नहीं है । जो आया है वह जायेगा, खत्म हो जायेगा । एक दिन सबको रवाना होना है । दिल किसी का नहीं करता संसार को छोड़ने को। संसार सबको मीठा लगता है। कोई व्यापार कर बाजार से लौट जाता है, इंसान इसी तरह संसार में आया है । जो दुख जन्म लेने और शरीर छोड़ने में आत्मा को है, वह अति दुखदायी है। भगवान ऐंड़ी नोचते हैं, भगवान को खुजली भी होती है आत्मा छोड़ते समय शरीर को सैकड़ों बिच्छू-सांप काटने जैसा दुख होता है। ऐसा हिन्दू धर्म कहता है । मुस्लिम धर्म कहता है कंटीले झाड़ियों को मुख से होकर गुदा मार्ग से गुजरने तरह का दुख मौत से आत्मा को होता है। भगवान को खतरा है । आधे दर्जन स्टेनगनधरी, राइफलधारी आजू-बाजू तैनात हैं । भगवान आज मृत्यु दर्शन पर बोल रहे हैं । क्या मुझे मौत से डरना चाहिए? प्यार मोहब्बत मत करो । साजो-सामान के मोह-लाभ में मत फंसो । मालिक के साथ प्यार बढ़ाओ, तुम्हारा नाम अमर हो जायेगा, दुनिया से बढ़ाओगे, दुख बढ़ेगा । तुम राम-नाम अल्ला या, वाहे-गुरू से जुड़ो, कभी पतझड़ नहीं आयेगा । लोगों ने कहा-वाहे गुरू, धन-धन सतगुरू तेरा ही आसरा...! भगवान गुफा से निकले थे, गुफा में समा गये ।

भगवान गुफा में चले गये हैं क्या अब हम भगवान से मुलाकात कर सकते हैं ? भगवान के प्रेस प्रवक्ता आदित्य कहते हैं हुजूर भगवान की ओर से वे हर सवाल का जवाब देंगे । पत्रकारिता का मतलब हर हाल में सच होता है लेकिन ऐसा सच नहीं जो लोगों की भावना को ठोकर मारे । कुछ लोगों की भावना को ठेस लगी और ऐसे में कुछ बेवकूफी की गयी तो उन बेवकूफों को बख्शा नहीं जाना चाहिए । महाराज जी तो पशु-पक्षी क्या चीटियों को भी देखकर रास्ता बदल लेते हैं ।

— लेकिन प्रवक्ता महोदय हमें सवालों का जवाब सीधे भगवान से चाहिए क्योंकि आरोपी भगवान हैं ?

— देखिए हमारे डेरे का अपना प्रोटोकोल है । संतों का फकीरों का अपना जीवन होता है । संतों के पास राम नाम का धन होता है । संतों को मांपने का एक ही पैमाना है । संतों ने जो राह दिखायी है, उस पर चला जाये ।

— प्रवक्ता महोदय देश में भूमिगत लड़ाई लड़ने वाले नक्सली भी अपना जीवन गोपनीय नहीं रखते फिर किसी संत-फकीर के निर्मल जीवन को छुपाने की जिद क्यों ?

— यह घर नहीं किसी संत-फकीर का आश्रम है । किसी संत के जीवन को जानना पत्राकारिता का धर्म है । आप वैधानिक तौर पर गलत कर रहे हैं ।

— बाबाजी कंसट्रक्सन के कामों को खुद देखते हैं फिर मजलिस की व्यस्तता अलग । बाबा बहुत थक जाते हैं । संत-फकीर को उनके गुरू वचन से जानिए परखिए ।

- **पुष्पराज**